जुताई कर उसे घास रहित कर सकते हैं । इस फसल को अतिरिक्त खाद देने की आवश्यकता नहीं होती है।

बावची की बुआई का उपयुक्त समय जुलाई–अगस्त है। बीज को कतार की दूरी 60 से.मी. एवं पौधे से पौधें की दूरी 30 से 45 से.मी. पर बोते है। यह वर्षाकालीन फसल है, इसमें अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। समय पर वर्षा नहीं होने पर 1–2 सिंचाई कर देनी चाहिये जिससे उत्पादन अधिक होता है।

बुआई के 20–25 दिन बाद निदाई – गुदाई कर खरपतवार निकाल देना चाहियें। आवश्यकता होने पर 40–45 दिन बाद निदाई–गुडाई कर देनी चाहिये ताकि खरपतवार पर नियंत्रण रहता है एवं उत्पाद पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

फसल कटाई प्रबंधन (Post Harvest Management)

अक्टूबर–नवंम्बर माह में इसकी कटाई कर लेते है। इसकी फलियॉ एवं पत्तों दोनो को अलग–अलग काटते है। इसकी जड़ को उखाड़ कर साफ कर लिया जाता है। इसके बीज की माँग बाजार में हमेशा बनी रहती है।

प्रति हेक्टेयर बावची के बीज का उत्पादन लगभग 8–10 क्विंटल होता है। बीज का विक्रय मूल्य 50–60 प्रति किग्रा. तक होता है।

बावची के बीज से जो तेल निकलता है, जिसका अहम उपयोग ल्यूकोडर्मा तथा कुष्ठ रोगों को खत्म करने तथा चर्मरोगों को ठीक करने के लिए किया जाता है। बावची के बीज का उपयोग यूरीनेसन तथा एनथेलमिंटिक के रूप में भी किया जाता है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
पादप कार्यिकी विभाग
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726
ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

बावची

***Psoralea corylifolia* (L.)**

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

बावची

***Psoralea corylifolia* (L.)**

कुल	:	फैबेसी (Fabaceae)
हिन्दी नाम	:	बाबची, बाकुची
अंग्रेजी	:	Purple Fleabane
आयुर्वेदिक नाम	:	बाकुची
व्यापारिक नाम	:	बावची, बाकुची
उपयोगी भाग	:	बीज

बावची एक औषधीय पौधा है, जिसका उपयोग पारंपरिक आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धति में किया जाता है। यह पौधा भारत के गर्म और शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। यह आकार में छोटा झाड़ीदार तथा सुगंधित होता है। इसकी पत्तियाँ गोल व हरी होती है और फूल हल्के बैगनी रंग या नीले रंग के होते है। इसके बीज छोटे, काले या गहरे भूरे रंग के होते है। बीजों के माध्यम से औषधीय तेल प्राप्त होता है।

सम्पूर्ण भारत में खरपतवार जैसा पैदा होता है। यह उष्ण देशो के मैदानी भाग एवं आधे रेगिस्तानी क्षेत्रों का स्वंयजात पौधा है। मुख्यतः यह मध्य भारत के मैदानी भाग तथा पूर्वी राजस्थान, पंजाब और उत्तर प्रदेश के लगे हुए क्षेत्रो में पाया जाता है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा तमिलनाडू राज्य में इसकी कृषि भी की जा रही है।

औषधीय उपयोग

दाँतो से संबंधित होने वाली समस्याओं में इसकी जड़ पीसकर लगाने से राहत मिलती है। डायरिया में इसके पत्तों के उपयोग से राहत मिलती है। विभिन्न चर्म रोगो, कुष्ठ रोग, उल्टी आना, अस्थमा, पेशाब व जलन तथा पेशाब आने में तकलीफ होना, ब्रोन्काटिस, पाइल्स, एनिमिया आदि रोगों में इसके फलों का काढा बनाकर देने से राहत मिलती है। बालों तथा चेहरे पर कान्ति लाने में भी यह उपयोगी पाया गया है। यह रेचक के रूप में भी कार्य करता है तथा पेट के क्रीडों को निकालने में भी इसका उपयोग किया जाता है।

हृदय रोग, अल्सर, रक्त से संबंधित बीमारियों में इसके बीज द्वारा सफेद दाग के उपचार में प्रयोग किया जाता है।

ऐलीफेन्टायसिस (चमडी के फूल जाने आदि) रोगों में इसके बीज के तेल की मालिश करने से राहत मिलती है। रिंगवर्म में इसके बीज के पाउडर तथा नीबू के रस के साथ लेने पर उपयोगी पाया गया है।

जलवायु एवं मृदा

बावची के लिए कोई विशेष प्रकार की जलवायु की आवष्यकता नही होती है। सभी प्रकार के जलवायु में इसकी खेती की जाती है। बावची के उत्पादन के लिए उष्ण प्रदेशों के मैदानी भाग एवं रेगिस्तानी क्षेत्र के निम्न से मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र में ज्यादा पाए गए है। अच्छी जल निकास वाली बालू एवं बालू–दोमट मिट्टी वाले क्षेत्रों अच्छी वृद्धि होती है। प्रचुर कृषि के लिये अकार्बनिक वाली लाल मिट्टी जिसका पी एच 6.5 से 7.5 हो अधिक अच्छी मानी जाती है।

Plant

Leaf

Flower

Fruit

Seeds

कृषि तकनीक

उत्तम अंकुरण क्षमता के कारण, खेत में सीधे बीज बुआई करना चाहिये। एक हेक्टेयर भूमि के लिये 8 कि. ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है।

कृषिकरण

भूमि तैयारी

मानसून प्रारंभ होने के पूर्व खेत की 2 से 3 बार जुताई करके मिट्टी को बारीक भुरभुरा कर लेना चाहिये। सिंचाई सुविधा को ध्यान में रखकर खेत को छोटे छोटे प्लाट में विभाजित कर लेना चाहिये। वर्षा के आने के बाद कुछ खरपतवार आने के बाद भी खेत की